शोध संक्षेपिका

"नीरजा माधव के कथासाहित्य में चित्रित नारी"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड की पी.एच.डी.

(हिंदी) शोधोपाधि हेतू प्रस्तावित

शोध छात्रा

अर्चना बळवंतराव देशमुख

नया मोंढा, मार्केट कमिटी के सामने, प्लॉट नं. २,

परभणी

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार

हिन्दी विभाग,

ज्ञानोपासक महाविद्यालय, जिंतूर

जि. परभणी (महाराष्ट्र)

“नीरजा माधव के कथासाहित्य में चित्रित नारी”

अनुक्रमणिका

१. प्रथम अध्याय : नीरजा माधव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२. व्दितीय अध्याय : समकालीन साहित्य में नारी

३. तृतीय अध्याय : नारी का बदलता स्वरूप

४. चतुर्थ अध्याय : नीरजा माधव के कहानियों में नारी

५. पंचम अध्याय : नीरजा माधव के उपन्यासों में नारी

६. षष्टम अध्याय : नीरजा माधव के कथासाहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ

७. सप्तम अध्याय : उपसंहार

प्राक्कथन :

शोध की प्रेरणा और विषय चयन

बचपन से ही मुझे कहानियॉ सुनने का शौक रहा है । मेरी और मेरी चाची मुझे काहानीयॉ सुनाती थी । हर रोज कहानी सुनने से मुझे कहानी सुनने की आदत हो गई थी । हमस ब को कहानियॉ सुनने की और पढने की आदत बचपन से ही होती है । तभी से मुझे कथा साहित्य में रूची पैदा हुई । पाठशाला के पाठयक्रम में निर्धारित मराठी हिंदी की कहानियॉ बडे दिलचस्पी से पढने लगी इस प्रकार कथा साहित्य के प्रति मेरी रूची बढती गयी । आगे महाविद्यालयीन जीवन में बी.ए के लिए मैने हिंदी विषय चुन लिया फिर एम. ए. हिंदी विषय में ही किया । उन दिनों में मैंने कथात्मक साहित्य बहुत बढा था । एम. ए. और नेट, सेट पास होने की उपरान्त शोधकार्य करने के लिए मैं प्रेरित हो गयी । मैंने बहुत लेखिकियों के कथा साहित्य पढा लेकीन मुझे नीरजा माधव का कथा साहित्य बहुत अच्छा लगा । छात्रावस्था से ही स्तर स्नातकोत्तर स्तर पर कथा साहित्य के प्रति रूची रही । अत: मैने नारी जीवन केंद्रित शोध का विषय बनाया मै स्वंय नारी होने से मैने अपने शोधविषय को नारी केंद्रित रखने का निर्णय लिया ।निरजा माधव के कहानी संग्रह पढते पढते मुझे स्त्री के अजीब से व्यवहारों का दर्शन हुओ निरजा माधव के अन्य औपन्यासिक कृतियॉ पढकर मैं नारी जीवन से वाकिफ होने लगी थी । बचपन में मॉ और चाची जो कहानियॉ सुनाती उस में लक्ष्मण व्दारा सीता को सीमा रेखा में रखना, सीता की अग्नीपरीक्षा, अहिल्या को उसके पतीव्दारा श्राप देना आदि सुनते समय किसी अज्ञात शक्ती होने का आभास होता था किंतु नीरजा माधव का कथा साहित्य पढकर मै अध्यात्म की कहानियों का विश्लेषन मन ही मन में करने

लगी थी । धीरे–धीरे यह जानने लगी की यह पुरूष तो पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में स्त्री के लिए जकडन है । समाज में व्याप्त पुरूषों का षडयंत्र है ।

नीरजा माधवजी का नाम साठोत्तरी युग के महिला कथाकारो में बडे आदर के साथ लिया जाता है । नीरजा माधवजी ने हिंदी साहित्य में अपना बहुमुल्य योगदान दिया है । वे एक साथ कवयित्री कहानिकार, उपन्यासकार, निबंधकार के रूप में हिंदी जगत में ख्यात है । उनका नाम साठोत्तरी युग के महिला कथाकारो में बडे आदर के साथ लिया जाता है । नीरजा माधवजी के कथात्मक साहित्य मे युगीन परिस्थिती समाज जीवन, सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक तथा नारी जीवन और नारी जीवन की विसंगतीयों का चित्रण हुआ है । नीरजा माधव के कथा साहित्य की नारी अधिकाशंतः आधुनिक नारी है । फिर भी समाज में हर समय अलग अलग समस्या का सामना करना पडा फिर भी वह सामना करते हार नही मानती है । वह हर समस्या का हल ढुंढकर आगे जाती है । आज की नारी अपने परिवार चलाने की लिए कामकाजी बनी है । वहॉ उसे अलग अलग पुरूषों के साथ सामना करना पढता है । वहॉ के पुरूष उसे अलग–अगल नजर से देखते फिर भी वह हार नही मानती और वह कामयाबी की आर आगे बढती है ।

प्रथम अध्याय : नीरजा माधव का व्यक्तित्व और कृतित्व

इस अध्याय को दो भागों में विभाजित किया है । व्यक्तित्व और कृतित्व प्रथम भाग में माधवजी के व्यक्तित्व को विभिन्न बिंदुओं से जैसे जन्म, बचपन, शिक्षा, परिवार, विवाह आदी में अध्ययन करने का विनम्र प्रयास किया है । जब की व्यक्तित्व में उनके समग्र साहित्य को विविध भागो में विभाजित कर के विवेचन किया जैसे उपन्यास, कहानी, कविता, ललित निबंध आदी ।

जन्म : नीरजा माधव का जन्म १५/०३/१९६२ में ग्राम कोतवालपुर पोस्ट मुक्तीगंज जिला – जौनपुर में हुआ था ।

माता –पिता : नीरजा माधव के पिता का नाम मथुरा प्रसाद था । उनके पिता शिक्षक थे ।माता का नाम विमलादेवी था । मॉ एक धर्मनिष्ठ महिला थी ।

परिवार : नीरजा माधव का परिवार जौनपुर के पास एक गॉव में रहता था । दो भाई, दो बहन थी । अभी २०१० में उनकी बडी बहन गुजर गई । अभी दो भाई और नीरजा माधवजी है ।

शिक्षा : नीरजा माधव का प्राथमिक शिक्षा गॉव में हुआ । उनका प्राथमिक स्तरिय शिक्षा हिंदी माध्यम में हुआ । दसवी से वह बनारस में पढाई के लिए गई ।उन्होने बी.एड. और एम.ए. अंगेजी में किया । बाद में पी.एच.डी. की ।

विवाह : नीरजा माधव का विवाह ५ मार्च १९९१ में डॉ. बेनी माधव जी से हुआ । उन्हें एक बेटा, एक बेटी है । डॉ. बेनी माधव महाविद्यालय में प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत है ।

कृतीत्व : नीरजा माधव ने १९८८ से लिखना शुरू किया था । उनके नौ उपन्यास, सात कहानी संग्रह, चार कवितासंग्रह और ललित निबंध प्रकाशित है ।

उपन्यास :

१. यमदीप (2002)

२. तेभ्य : स्वधा (2004)

३. गेशे जम्पा (2004)

४. अनुपमेय शंकर (2009)

५. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी (2010)

६. ईहामृग (2010)

७.धन्यवाद सिवनी (2010)

८.रात्रिकालीन संसद (2014)

९.देनपा—तिब्बत की डायरी

कहानी संग्रह :

१.चिटके आकश का सूरज (1997)

२.अभी ठरहो अंधी सदी (2010)

३.आदिम गन्ध तथा अन्य कहानियॉ (2002)

४.पथदंश (2003)

५.चुप चन्तरा रोना नही (2007)

६.प्रेम सम्बन्धों की कहानियॉ (2010)

७.वाया पॉडेपुर चौराहा (2014)

कविता संग्रह :

१.प्रथम छंद से स्वप्न (1989)

२.प्रस्थानत्रयी (2010)

३.प्यार लौटना चाहेगा (2013)

४.लिखते हुए शोकगीत

ललित निबन्ध एवं अन्य :

१.चैत चित्त मन महुआ (2009)

२.सॉझी फूलन चीति

३.रेडिओ का कला पक्ष

४.हिन्दी साहित्य का ओझल नाीर इतिहास (2012)

५.साहित्य और संस्कृति की पृष्ठभूमि (2014)

६.यह राम कौन है ?

७.शंकराचार्य पीठ और परम्परा (2013.)

८.भारतरत्न

९.तत्वबोध विवेचनी

व्दितीय अध्याय : समकालीन साहित्य में नारी

शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण नारी पढी लिखी सुशिक्षित हो गई है । एक काल ऐसा था की नारी घर से बाहर नही निकलती थी । लेकिन अब उस में सुधार होकर नारी में परिवर्तन आ गया है । नारी हर क्षेत्र में नौकरी करने लगी है । भारतीय नारी, शिक्षा क्षेत्र में प्रगती होने के कारण अपने देश में अनेक क्षेत्र में काम करती हुई दिखायी देती है ।

समकालीन साहित्य में वैधव्यता, बलात्कारी नारी, बालविवाह, अशिक्षा के कारण गुलागगिरी, जातीपाती को विरोध, दांपत्य जीवन, त्रिकोन समस्या, विवाह पुर्व तथा विवाहबाहय संबंध आदि विषयों को लेकर भरा हुआ है । आधुनिक नारी की महत्वपूर्ण विशेषत: यह की वह स्वंय आत्मनिर्भर है । अपना ही नही अपने परिवार का भरण—पोषण भी वह करती है । आधुनिक नारी आर्थिक दृष्टी से स्वयंपूर्ण हो रही है । परंतु उसे अनेक संकटो का सामना भी करना पडतो है । नौकरीपेशा नारी, परिवार का भरण—पोषण करनेवाली नारी, उद्योगशील नारी, नेतृत्व करनेवाली नारी, दायित्व वहन करनेवाली नाही, अन्याय और अत्याचार के प्रति विद्रोह करनेवाली नारी आदी । दप्तरी जीवन, समाज में कहीं काम करनेवाली नारी, परिवार में

समस्याग्रस्त नारी, गरीब परिस्थिती में घिरी हुई नारी आदि अन्य विषयों को लेकर नीरजा माधव ने कथा साहित्य समृध्द किया है ।प्रस्तुत अध्याय में हम प्रतिनीधिक महिला रचनाकारों के कथासाहित्य में चित्रित नारी का अनुशिलन करेंगे ।

तृतिय अध्याय : नारी का बदलता स्वरूप

मध्ययुग की नारी अन्याय पीडा, अत्याचार आदी सबको सहते हुये जीवन जीती थी । शिक्षा से तो वह कोसो दूर थी । धीरे धीरे ऐसे युग बीतता गया, परिस्थितीया बदलती गई । नारी के जीवन में बदलाव आने लगा । बालविवाह, सतीप्रथा आदी बंद होती गई । शिक्षा का प्रावधान उसके सामने आने लगा । भारत स्वतंत्रता के बाद इस में और ही बदलाव होता गया । अस्सी के दशक तक महिलाओ को कानुन का सहारा मिलता गया । अशिक्षित नारी को प्रौढ शिक्षा मिलती गई और बालिकाओं का बालविवाह बंद हो गया । शिक्षा के कारण आत्मीकबल (आत्मविश्वास) बढने लगा । नारी डयोंढी लांघकर अपने पैरो पर खडी होने लगी ।एक स्त्री केवल पत्नी, माॅ, बेटी और बहन बनकर रहती थी । अब वो वह शिक्षा के कारण वह अधिकारी आदी बडे पदों को ग्रहण करने लगी है । फलस्वरूप आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी पुरूष के साथ गतीशील है ।

नीरजा माधव के कथा साहित्य मे नारी का स्वरूप बदला हुआ मिलता है । जिसमें वह केवल माॅ, पत्नी, बहन, बेटी इतना ही नही बल्की समाज में बडे बडे पदोंपर विराजी हुई है । नीरजा माधव की नारी आत्मविश्वास हीन और घरेलु, अशिक्षित नारी नही है । बल्की वह अपना अस्तित्व समाज के सामने खडा करती है ।

चतुर्थ अध्याय : नीरजा माधव की कहानियों में नारी

नीरजा माधव के आज तक सात कहानी- संग्रह प्रकाशित हुऐ है । चिटके आकशश का सूरज, अभी ठहरो अंधी सदी, आदिम गन्ध तथा अन्य कहानियॉ, पथदंश, चंप चन्तरा रोना नही, प्रेम सम्बन्धों की कहानियॉ, वाया पॉडेपुर चौराहा आदि ।

'बेठन' कहानी में शिक्षा की समस्या, आर्थिक अभाव के कारण गरीबी, स्त्री के सपनो का चित्रण है। 'हवा' इस कहानी में निरजा माधव ने कार्यालय में काम करनेवाली कामकाजी नारी का चित्रण किया है । उसके उॅचे सपनों को कार्यालय के बुरे विचार वालो लोगों से बढती समस्या, परेशानियॉ और अपमान आदि का चित्रण है । नीरजा माधव ने करीब—करीब दो—सौ कहानियॉ लिखी है ।

पंचम अध्याय : नीरजा माधव के उपन्यासों में नारी

नीरजा माधव को पहले उपन्यास से प्रसिध्दी मिली है । उन्होंने नऊ उपन्यास लिखे है ।

१. **यममदीप** : नीरजा माधव का यह पहला उपन्यास है । यह उपन्यास 'थर्ड जेंडर' पर लिखा है । इस उपन्यास को बहुत प्रसिध्दी मिली । विशेष कर हिजडा समुदाय ने भी इस उपन्यास को संमती दी है । क्योंकी उसमें उसके जीवन की कहानी है । इस उपन्यास से सामान्य मनुष्य का 'थर्ड जेंडर' को देखने का दृष्टीकोन बदल दिया है ।

२. **तेभ्य: स्वधा** : इस उपन्यास में जब भारत—पाकिस्तान का विभाजन हो रहा था तथी नारी पर कितना अत्याचार हुआ था इसपर आधारित यह उपन्यास है । अत: इस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी का चित्रण है ।

३. **गेशे जम्पा** : यह उपन्यास तिब्बत मुक्ती तथा तिब्बती शरणार्थियों के जीवन पर रचा गया पहला उपन्यास है । राजनीतिक विषय एवं कूटनितीक चालों को आधार बनाकर लेखिका ने जिस सफलता से कृति को राग एव ंके बीच सामंजस्य तथा समसामायिक चिन्तन से जोडा है । वह उनकी मौलिक दृष्टी की पहचान है । चिनी सरकार के घोर दमन नीति से तिब्बती समुदाय का अस्तित्व किस संकट में पड गया है । तिब्बत में चीन सरकार ने बेतहाशा जुल्म ढाया है । जिस में सबसे ज्यादा यहॉ की महिलाऍ प्रभावित हुई है । जिस से पत्नी का अधिकार एवं मातृत्व का सुख छीना जा रहा है ।

४. **अनुपमेय शंकर** : नीरजा माधव की औपन्यासिक कृती “अनुपमेय शंकर” हिंदू धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का अनुपम आख्यान है भारतीय जीवन दर्शन की गौरवगाथा है । ग्रंथ में आचार्य शंकर की मॉ आर्याम्बा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के गौरवमय अतीत का पुर्नस्मरण परिलक्षित होता है । यदि उपन्यास के मूल स्वर को सुना जाये तो वह भारतीय संस्कृति कि विराट आत्मा से प्रस्फुटित है । इस उपन्यास मे विविध सोपानों में हिन्दू धर्म की विशिष्टताओं का वर्णन है ।

५. **अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी** : इस उपन्यास की नायिका भवप्रीती की डायरी के माध्यम से लेखिकाने अवर्ण महिला की बेचैनी, हाशिए के समाज की हैसियत नारी के प्रति पुरूषवादी सोच, नई पीढी का अपने बुजुर्गो के प्रति उपेक्षा का भाव और नव समाज की संरचना के तन्तुओं का को

प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है । उपन्यास के घटनाक्रम गॉव के परिवेश से लेकर कस्बे तथा महानगर की सडको`से जुडे हुए है । इस तरह यह उपन्यास किसी खास गॉव या शहर से उठकर पूरे भारतीय समाज का आईना बन जाती है ।

६.**ईहामृग** : इस उपन्यास में गौतम बुध्द की दिव्य उर्जा से आप्लावित भूमि सारनाथ है । यहॉ की पुण्यभूमी से बुध्द ने ज्ञान की एक ऐसी अजस्त्र धारा प्रवाहित जो आज विश्व के कोने कोने मे पहुॅच चुकी है । यहॉ धर्म है, धर्म—व्दन्व्द भी है शोषण और गरीबी की मार झेलता निम्न वर्ग है, सेवा और समर्पण का बोर्ड टॉगे स्वयंसेवी संस्थाएँ भी है । जिसकी आड में धार्मिक कटुरता और लुक—छिप धर्मांतरण का खेल भी चलता रहाता है । फिर भी शांती की खोज में अनेक देशों से लोंग यहॉ आते है और आते रहेंगे ।

७.**धन्यवाद सिवनी** : यह उपन्यास आठ पर्वो में विभक्त है । अनन्तश्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर—एवं व्दारका शारपीठाधीश्वर—जगतगुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वतीजी महाराज के चरित्र के साक्षात चित्र चित्रित करनेवाले इस उपन्यास के लेखन के पीछे उपन्यास कर्ती का मुख्य उदेश्य स्वामी के जीवन, उनकी जीवनचर्चा, उनके आध्यात्मिक दार्शनिक चिंतन के रहस्यों को उद्घाटीत करना तथा उनकी मानवीय संवेदनाओ और सम्भावनाओं को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करना है ।

८.**रात्रिकालीन संसद** : इस दुनिया में हर प्राणी का एक चलता फिरता टेप है । सुखांत कम और दु:खात अधिक । जीवन के इसी यथार्थ को केंद्र में रखकर रचा गया उपन्यास रात्रिकालीन संसद ख्यातिलब्ध कथा लेखिका नीरजा माधव की रचनात्मक श्रृंखला की उत्तम और विशिष्ट कडी है ।

दुराग्रहों, पूर्वाग्रहों, वादों तथा विमर्शों की छलनाओं से निस्पृह उनके कथा संसार में विषय की नवीनता, चरित्रों की विविध और शिल्प की चारूता है । दु:स्वप्नों का जाल नाही बल्कि जीवन की बहुरंगी संवेदनाओं के चित्र है । जीवन को सुन्दर साकार करने की लिए कल्पनाएँ यथार्थ के समानांतर चलती है ।

९. **देनपा तिब्बत:** यह उपन्यास नीजा माधवजीने तिब्बत देश को आझादी मिलने के लिए लिखा है । जो चीन देश ने तिब्बत देश को आक्रमण करके चीनने तिब्बत पर कब्जा किया है । वह पुरे विश्व समाज को जागृत करती है की, एक देश को चीन ने हडप किया है । वह स्वतंत्र होना चाहिए । भारत और चीन के बीच तिब्बत आझाद रहेगा तो भारत और चीन के बीच जो सीमाबाद होता है, वह नही होगा ।

षष्टम अध्याय : नीरजा माधव के कथासाहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ

आज की नारी पढी लिखी होते एुढ भी उसे परिवार में और समाज में अनेक कठिन प्रसंगो का सामना करना पडतो है । पारिवारिक संघर्ष से उबकर नारी जब प्रगतिवादी विचारधारा का अवलंब करती है तो समाज उसे साथ नही देता । बल्कि उस पर लॉछन लगाता है । परिणामस्वरूप नारी के चरित्रहीनता की समस्या निर्माण होती है । शिक्षा के क्षेत्र में अपने अस्तित्व को दिशा देते समय उसे पुरूषो से अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है । शिक्षा के क्षेत्र में अपने पुरूष के मृत्यू के उपरान्त वैधव्यता प्राप्त होना आदि समस्या नारी के सामने उभर आती है । नीरजा माधव के कथासाहित्य में विविध समस्याओं का सामना नारी को करना पडा है । नीरजा माधव की नाही ने समाज में जितना उच्च स्थान प्राप्त किया है, समाज के पुरूषों के नजरियों में उतरी हुई है । उसके सामने अनेक

समस्याएँ खडी है । जैसे —पराधीनता की समस्या, समान अधिकार की समस्या, पारिवारिक समस्याएँ, आर्थिक समस्या, चरित्रहीनता की समस्या, सामाजिक समस्या, बिगडते दाम्पत्य जीवन की समस्या, विधवा सममस्या, रखैल की समस्या, तलाक की समस्या, बेकारी की समस्या, बाल विवाह की समस्या, बॉझपन की समस्या, सतीप्रथा की समस्या आदि ।

सप्तम अध्याय : उपसंहार

मेरा शोध विषय 'नीरजा माधव के कथासाहित्य में चित्रित नारी' यह है । अत: इस अध्याय में शोधगत निष्कर्षो को प्रस्तुत किया जायेगा ।

शोध छात्रा
अर्चना बळवंतराव देशमुख
नया मोढा, मार्केट कमिटी के सामने
प्लॉट नं. २, परभणी

शोध निर्देशक
प्रा. डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार
हिन्दी विभाग,
ज्ञानोपासक महाविद्यालय, जिंतूर
जि. परभणी (महाराष्ट्र)